been mentioned. But, to the extent possible we will prevail upon KRIBHCO to make sure that they take all of them. But if you put the condition that you have to taken them completely, then nothing will happen. These are conditionalities, which have been approved, in consulation with the State Government, from time to time and this is the agreement that has been reached. However, I would definitely try to prevail upon KRIBHCO to ensure that, to the extent possible, they take the people who are already working there.

श्री सूर्यभान पाटील वहाडणे: महोदय, मैं केवल एक छोटा सा सवाल पूछना चाहता हूं। 1990 में यह प्रोजैक्ट बंद हुआ। इसमें बाद में ही रूचि दिखायी गयी। बाद में ही सिद्धांततया स्वीकार किया और बाद में ही अनुमोदनार्थ भेजा गया। मैं इस संबंध में केवल यही प्रश्न करना चाहता हूं कि क्या 2010 के पहले यह प्रोजेक्ट पूरा हो जाएगा?

श्री सुरेश प्रभु: सर, मैं इतना पैसीमिस्ट नहीं हूं। लेकिन इतना ऑप्टीमिस्ट भी नहीं हूं कि कुछ महीने में कहूं।

Discrimination between Allopathic and Indian Systems of Medicine

*183. SHRI ABANI ROY: Will the Minister of HEALTH AND FAMILY WELFARE be pleased to state:

(a) whether the facilities extended to CGHS doctors in Allopathic system are also given to CGHS doctors of Indian Systems of Medicine;

(b) if not, the reasons for the discrimination;

(c) whether the number of CGHS dispensaries/units of allopathic system set up during the past few years in the capital also do not compare with the CGHS dispensaries/units of ISM; and

(d) if so, the reasons for the discrimination?

THE MINISTER OF HEALTH AND FAMILY WELFARE (DR. C.P. THAKUR): (a) to (d) A statment is laid on the Table of the House.

Statement

(a) Yes, Sir.
(b) In view of (a) above, the question does not arise.

(c) Allopathic and ISM dispensaries have been established in the various CGHS cities as given below:

Allopathy	
Delhi	: 3 in 1993
Guwahati	: 3 in 1996
Thiruvananthapuram	: 3 in 1996
Hyderabad	: 1 First Aid Post in 1993
Nagpur	: 1 First Aid Post in 1993
ISM (UNANI)	: 1 in 1994
Bangalore	

The last ISM unit to open in the capital was the Unani Unit at flat No. 31 South Avenue with effect from 11.10.89.

(d) More allopathic dispensaries have been pended under CGHS in Delhi and other cities as there is more demand for this system compared to the ISM systems of treatment. Further, the proposal for setting up more allopathic and ISM dispensaries under CGHS could not be taken up due to resources constraints.

SHRI ABANI ROY: Sir, there is no doubt that they are getting the same pay-scales, but the facilities extended to them are not the same. Will the hon. Minister see to it that the facilities that are extended to the allopathic doctors at the level of CMO and above, are also extended to the Indian Systems of Medicine doctors and the Homoeopathic doctors.

DR. C.P. THAKUR: Sometime back this cadre was getting a lower pay-scale. Than the pay-scales of both the allopathic and ayurvedic doctors became equal. The hon. Member has raised the issue of their promotional avenues. It has now been recommended that a separate cadre for them should be formed so that they can get the same facility. This is under the consideration of the Government.

SHRI ABANI ROY: My second supplementary arises from the Minister's reply. He said that the demands on allopathy are much more than the ayurvedic system. But the beneficiaries are going to other ayurvedic centres as the facility is not available in the CGHS dispensaries. They are going to private doctors, even to the homoeopathic doctors. Without providing facilities, how could the Minister say that there was no demand? People are going to Kerala.

People are going to other places. People in Delhi are going to private practitioners because ayurvedic medicines, indigenous products are being marketed by some producers. So, why is the Government not doing it by giving more facilities? The cost of allopathic drugs is increasing day by day, and the side-effects are also much more. Why is the Government not coming forward to give facilities through the ISM&H, that is, the Indian Systems of Medicine and Homoeophathy?

DR. C.P. THAKUR: Sir, actually opening of a CGHS dispensary at any place is done on the suggestion of a staff inspection unit of the Finance Department. They study the requirements of that area and then suggest to open a dispensary. That is how the number of dispensaries is increased. It is done according to their recommendations. It is not on the recommendations of our Department.

Regarding facilities at the dispensaries, we are improving them, including the availability of drugs to the ISM units. Our Department has taken up the issue that the ISM should be upgraded and all improvements should be done in the ISM so that our export of drugs catches with our neighbouring gaint because they export drugs worth Rs. 30,000 crores whereas we export drugs worth of Rs. 300 only. The Department is on the job that ISM should get all the facilities, all the back up, all the research facilities and everything.

श्री एस० एस० अहलुवालिया: सभापति महोदय, जिस देश में आयुर्वेद लिखा गया हो, उस देश में इंडियन सिस्टम ऑफ मेडिसिन खोला गया और आज भी हर्बल मेडिसिन्स का जो फार्मोकॉपिया है, हम उसे पूरी तरह से तैयार नहीं कर सके इसलिए पश्चिम देशों में इसका प्रचलन नहीं हो सका है। भरत में खासकर हमारे जो स्वास्थ्य मंत्री है श्री सी०पी० ठाकुर, वे खुद ऐलोपैथी के बहुत अच्छे डाक्टर हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि इंडियन सिस्टम ऑफ मेडिसिन जिसके लिए एक नया मंत्रालय खोला गया, उसका प्रचलन भारत में करने की जरूरत है। सारा विश्व हर्बल मेडिसिन की ओर स्विच ओवर कर रहा है और इस आयुर्वेद के देश में ही यह नहीं हो... तो क्या इन्होंने कोई टाईमफ्रेम बनाया है कि सी०जी०एच०एस० से इसकी शुरूआत करेंगे और सारे भारत में जहां सी०जी०एच०एस० डिस्पैंसरियां हैं, वहां एक-एक शाखा आयुर्वेद मेडिसिन की भी होगी? ऐसा कोई टाईमफ्रेम बनाया हो तो बताने की कृपा करें।

डा० सी० पी० ठाकुर: सभापति महोदय, जहां तक आयुर्वेद का सवाल है, हम लोगों ने देखा

कि आयुर्वेद वेद से शुरू हुआ, उसके बाद धन्वन्तरि ने "सुश्रुत संहिता" लिखी, उसके बाद "जीवक" लिखा, उसके बाद बहुत लोग लिखते गए। तो आयुर्वेद का जो सारा लिट्रेचर है, उसका हम लोग चाहते हैं कि इंटरनेट पर रख दें और दुनिया वाले भी देखें कि हमारा जो देश है, उसको वह हजारों सालों से, बहुत पहले से आयुर्वेद का इस्तेमाल कर रहा है। इसके लिए हम लोगों ने एक नया प्रोजेक्ट शुरू किया है। जितने बढ़िया आयुर्वेदिक प्लांट्स हमें नहीं मिलते थे, उनके लिए एक प्रोजेक्ट हम लोग शुरू करने जा रहे हैं अपने देश में कि वे प्लांट्स हमको मिलें। लेकिन जहां तक डिस्पैंसरी खोलने का सवाल है, वह तो जैसा मैंने पहले ही कहा कि उसके लिए कुछ क्राईटीरिया बना हुआ है फाईनेंस डिपार्टमेंट का। वे लोग स्टडी करते हैं, उसकी रिक्वायरमेंट स्टडी करते हैं, उसके बाद ही खोलेंगे। तो आयुर्वेद को देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी प्रमोट करने के लिए हमारा विभाग बहुत जोर-शोर से लगा हुआ है।

श्री सी० एम० इब्राहीम: सर, ऑल्टरनेटिव सिस्टम ऑफ मेडिसिन का एक सुझाव डॉ० घोष आठ महीने पहले स्वास्थ्य विभाग को भेजा था। आज तक उसका रिप्लाई नहीं मिला है। वे हिन्दुस्तानी डॉक्टर हैं ऑल्टरनेटिव सिस्टम ऑफ मेडिसिन में। जर्मनी ने उनको बुला कर अपने य यह सिस्टम खुलवाया है, अमेरिका ने भी उनको बुला कर इस सिस्टम को खुलवाया है। तो क्या आप उनके सुझाव पर विचार करेंगे?

डॉ० सी० पी० ठाकुर: जरूर। हम इसे अपने डिपार्टमेंट से मंगवा कर देखेंगे, अगर वह डिपार्टमेंट में आया होगा तो हम उस पर जरूर विचार करेंगे।...**(व्यवधान)**...

श्री मोहम्मद आज़म खान: रिसर्च इंस्टीटयूट वाले ऑडियो-वीडियो खरीद रहे हैं बजाय दवाओं पर रिसर्च करने के।

डॉ० सी० पी० ठाकुर: ऐसा नहीं है।

श्री मोहम्मद आज़म खान: मैंने कंप्लेंट की है आपको। जिन कंपनियों की मेडिसिन्स मिलती हैं वहां, वे कंपनियां हैं ही नहीं हिन्दुस्तान में। ... वे कंपनियां हैं ही नहीं हिन्दुस्तान में। वे सिर्फ कागजों पर हैं।

डॉ० सी० पी० ठाकुर: उसी के लिए हम लोग नए-नए रेग्युलेशन्स बना रहे हैं कि आयुर्वेदिक ड्रग्ज़ जो मिले, वह प्रामाणिक ड्रग मिले।

MR CHAIRMAN: Question Hour is over.